अंतरा-शब्दशक्ति

बेटियाँ

काव्य संग्रह

रागिनी स्वर्णकार (शर्मा)

बेटियाँ

(काव्य सँग्रह)

रागिनी स्वर्णकार (शर्मा)

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन
इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-13-1

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ © रागिनी स्वर्णकार (शर्मा)

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण चित्र : संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Betiyan by Ragini swarnkar (sharma)

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं |प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत :प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं| प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं|

नया संग्राम लिख देंगे

आगाज़ लिख देंगे, हम ही, अंजाम लिख देंगे
हम चूड़ियों से ,इक नया, संग्राम लिख देंगे
है ज़िंदगी भी और हक जीना हमारा है
हम वक़्त के पन्नो पे ,क्रांति कलाम लिख देंगे

कल्पना चावला, सानिया मिर्जा, पी टी उषा ,साक्षी मलिक, दीपा कर्माकर, इरोम चानू शर्मिला, एम सी मैरीकॉम, चंदा कोचर, सुमित्रा महाजन, माधुरी दीक्षित ये भारत की आदर्श बेटियाँ हैं।

जब भारत की बेटियाँ ठान लेती हैं तो सफलता की ऊंची इबारत लिखती है। एवरेस्ट पर भी बेटी पढ़ाओ की इबारत लिख देती हैं । फिर भी हम बेटियों को कोख में मार रहे हैं यह हमारी कमजोरी को अभिव्यक्त करता है कि हमारा समाज बेटियों को सुरक्षा देने में असमर्थ है, स्त्री अस्मिता लहूलुहान,मातृत्व सहमा हुआ, वात्सल्य सिसक रहा,बचपना दुबक रहा, शैशव भी न बच सका नज़रों से हैवानों की !!! मानवता शर्मसार है.....!!

विश्वगुरु का दर्जा हासिल करने वाला विश्वविख्यात ,विश्व वंदनीय भारत जो अंतरिक्ष को नापने की शक्ति रखता है ,सूर्य समान ही तेजोमय भारत आज बच्चियों और महिलाओं पर होने वाले बलात पाप की अपकीर्ति में दिन प्रतिदिन शर्मसार होरहा है । हम सभी भारतीयों के लिए डूब मरने जैसी बात है । अब समय की मांग औऱ अस्तित्व की पुकार है , सख्त क़दम उठाने की आवश्यकता है ।

संकल्प तो लेना ही होगा
अगर बदलना चाहते हालात को
आवाज फिर दिल से आनी चाहिए
ठहराव सा आ गया बेटियों का देश में
फिर कोई झांसी की रानी चाहिए
विवेकानन्द ,वीरशिवा ,छत्रसाल
देश को फिर वही जवानी चाहिए,.....

रागिनी स्वर्णकार (शर्मा)

अनुक्रमणिका

1	वरदान बेटियाँ	5
2	बेटियाँ	6
3	अब कहीं सिसके न ग़म से बेटियाँ	7
4	नहीं बेटी पराई,अब पराया ,धन नहीं कहते	8
5	फिर वही झाँसी की रानी चाहिए	9
6	बेटियों को बख्श दो,न दरिंदे बनो	10
7	पलाश सी बेटियाँ	11
8	सहचरी तुम्हारी हूँ	12
9	अपनी कलम भी देश के मैं नाम करती हूँ	13
10	मैं वो नहीं जो डर जाऊँगी	14
11	पर हैं अपने उड़ान अपनी है	15
12	मातृभूमि के लिये	16

वरदान बेटियाँ

सुख की संभावना सी
ईश की आराधना सी
साधना हैं जनमो की
अभिमान बेटियाँ ।

चाहे न बजाओ थाल
करेगी वही कमाल
शक्ति है शिव की वही
वरदान बेटियाँ

दोहे सी सरल हैं ये
जल सी तरल है ये
जीतें दिल हुनर से
ज्ञानवान बेटियाँ ।

समस्या का *हल* हैं ये
आज औऱ कल है ये
मात पिता की ढाल हैं
प्रज्ञा वान बेटियाँ ।

सुंदर श्रृंगार सी हैं
फूलों के ये हार सी हैं
मूरत है ममता की
हैं नादान बेटियाँ ।

मीरा की भक्ति भी देखो
लक्ष्मी की शक्ति भी देखो
साहित्य महादेवी का
हैं महान बेटियाँ

मेहंदी ,बिंदिया जैसी
भोर की निंदिया जैसी
पावन हैं प्रयाग सी
अरमान बेटियाँ ।

बड़ी ही सबल हैं ये
थोड़ी सी कोमल हैं ये
माँ भारती का मान सी
हैं उत्थान बेटियाँ,..।

बेटियाँ

समाज का श्रृंगार हैं
ममता की फुहार हैं
कल्पना कभी इंदिरा
रूप ढली बेटियाँ

अंग -अंग दान करें,
जीवन कुर्बान करें
प्रसव पीड़ा चुपके
सह चलीं बेटियाँ

देवी, दुर्गा पुकारते
है आरती उतारते
कन्या का भ्रूण मारते
गयीं छली बेटियाँ

खिलतें गुलाब सी वो
होती है नायाब सी वो
ख़ुशबू बिखेरती हैं
काँटों पली बेटियाँ,...।

अब कहीं सिसके न ग़म से बेटियाँ

दिल में अरमां ले रहे अँगड़ाइयाँ
बज रहीं हैं वक्त की शहनाइयाँ

बीते लम्हों की विदाई हो रही
भविष्य की नई खुल रहीं खिड़कियाँ

अब कदम मन्ज़िल को पाकर ही रुकें
चाहे तूफ़ां आये या फिर आधियाँ

खत्म बुराई हो यही हैं कोशिशें
सौगात दिल की है यही बधाइयाँ

है गुजारिश फिर समाज से बस यही
अब कहीं सिसकें न ग़म से बेटियाँ,..।

नहीं बेटी पराई, अब पराया ,धन नहीं कहते

मुकम्मल हैं ग़ज़ल ही वो उसे कतरन नहीं कहते
वहाँ बेटी उसे कहते, कभी दुल्हन नहीं कहते

बिखरता है, निखरता हैं, सँवरता है वही जीवन
नहीं तपता, अगर सोना, उसे कुन्दन नहीं कहते

जहाँ ना मन महक जाये, उसे गुलशन नहीं कहते
करे बेअसर तपन नहीं, उसे चन्दन नहीं कहते

घर की इज्जत, सम्मान, शक्ति होती हैं बेटियाँ
नहीं बेटी पराई, अब पराया, धन नहीं कहते,..।

फिर वही झाँसी की रानी चाहिए

खून से लिखी इक कहानी चाहिये
आवाज ये दिल से आनी चाहिये

पाप ,पाखण्ड ,कुप्रथायें भस्म हों
आग अब ऐसी धधकानी चाहिये

तहस- नहस हो सकें दुश्मन देश के
एकता इस तरहा बनानी चाहिये

विवेकानन्द ,वीरशिवा ,छत्रसाल
देश को फिर वही जवानी चाहिये

सहमे आंकड़े बेटियों के देश में
फिर वही झाँसी की रानी चाहिये,...।

बेटियों को बख्श दो न दरिंदे बनो

घाव गहरे जो लगे गुनगुनाने लगे
ज़िन्दगी से हम नज़रें मिलाने लगे

अभावों की जब इबारतें हमने पढ़ी
दर्द हमको दुनिया के रुलाने लगे

जबसे कर ली है काँटों से दोस्ती
दिल हम गुलाबों के महकाने लगे

पाठ परिश्रम पढ़ना जरूरी लगा
छाले क़दम ख़ुद ही सहलाने लगे

बेटियों को बख्श दो न दरिंदे बनो
क्यों माता की कोख भी लजाने लगे,..।

पलाश हैं बेटियाँ

निराशा के अंध में,
किरण सी आस हैं बेटियाँ ।
छल कपट की धुंध में
विश्वास हैं बेटियाँ !
प्रकृति के प्रेम का
प्रतिबिम्ब हैं ये सभी।
पतझरों के सघन वन में पलाश हैं बेटियां

नशीब वालों को ही
मिलतीं है बेटियाँ
घर,आँगन में फूल सी
खिलतीं हैं बेटियाँ
माँ-बाप के सम्मान का
रखती सदा ख्याल
घर में सोना हिरनी सी उछलतीं हैं बेटियाँ

घर की मर्यादा,
श्रृंगार हैं बेटियाँ
फूल, शबनम ,
कभी हार हैं बेटियाँ
इनको अबला समझने की
भूल मत करना
वक्त पड़ने पर ढाल और तलवार हैं बेटियाँ ।"

सहचरी तुम्हारी हूँ

न अबला हूँ ,न ही हूँ भारी ।
मैं हूँ प्रिये सहचरी तुम्हारी ।

कोमलता है स्वभाव हमारा !
जिससे संसार बनता प्यारा !

ममत्व तो हमारा गहना है ,!
मुझे साथ-साथ ही चलना है !

हम करते पौरुष का आदर,
तुम ममता का सम्मान करो ।

सुन्दर संसार बनायेंगे मिल
यही साथ -साथ संकल्प धरो ।

अपनी क़लम भी देश के मैं नाम करती हूँ

कहती नहीं पहले स्वयं मैं काम करती हूँ
जो पुजारी कर्म के उन्हें सलाम करती हूँ

गुरूर मुझको है कि मैं एक हिंदुस्तानी हूँ
अपनी कलम भी देश के मैं नाम करती हूँ

इतिहास ऐश्वर्यशाली नाज़ इस पर है मुझे
देश के अमर शहीदों को प्रणाम करती हूँ

मन्ज़िल बहुत दूर लेकिन पाना जरूरी है
मेहनत मैं सतत सुबह और शाम करती हूँ

हौंसलें तोड़ना चाहते हैं कुछ कामचोर
इन्हीं इरादों को मैं भी नाकाम करती हूँ,....।

मैं वो नहीं हूँ जो डर जाउँगी

मैं वो नहीं हूँ , जो डर जाऊँगी !
मैं आँधियों सेभी लड़ जाऊँगी !

सता न सकेंगी हमें रूढ़ियाँ,
थका न सकेंगी हमें सीढ़ियाँ
काँटे रोकें चाहे रास्ते डसें
लोग हँसते हैं, हँसते रहें

संग संग समय के गुज़र जाऊँगी!!
मैं वो नहीं हूँ जो.डर जाऊंगी

प्रीत ही मैं लिखूँ चाहे नफरत मिले
मैंने सपने सभी मेहनत से सिले
उमंगों से भरा एक दरिया हूँ मैं
महकती हुयी सी एक बगिया हूँ मैं

खुशबू हूँ हवाओं में बिखर जाऊँगी !!
मैं वो नहीं हूँ जो डर जाऊँगी,...।

पर हैं अपने उड़ान अपनी है

पर हैं अपने उड़ान अपनी है
हर घड़ी ये एक सी न रहनी है

जज्बा दिल में आगे बढ़ने का
मन्ज़िलें मुस्कुराती मिलनी हैं ।

परिश्रम से कभी न डरना यारो
इससे ही ज़िन्दगी सँवरनी है

फ़िक्र क्यों हो हमें हवाओं की
परवाह कहाँ हमको अपनी है

कच्चे घड़े सा बिखर जायेगा
ठोकर मौत की जब लगनी है

हमको तो शुरूर मोहब्बत का
जिंदगी उनकी भी महकनी है

मेरा महबूब खुदा है यारो
उसकी रहमत दुनिया चलनी है,...।

मातृभूमि के लिये

तन मन धन है तुम्हें समर्पित
मेरा जीवन तेरे नाम ।
धन्य भाग समझूँ मैं अपना
जो आऊँ तुम्हारे काम ।

तेरी माटी सौंधी- सौंधी
मन में खुशबू भर देती है
गंगा के अमृत की लहरें
सारी पीड़ा हर लेती हैं
तेरी संदली मन्द हवायें
देती सबको जीवन दान
धन्य भाग समझूँ मैं अपना
जो आऊँ तुम्हारे काम

बनकर बदली विश्व में
सब की प्यास मिटाऊँ मैं
या फिर तेरी ख़ुशबू बनकर
सारा जग महकाऊँ मैं
दे दो माता तुमसे माँगू
दे दो मुझको यह वरदान
धन्य भाग समझूँ मैं अपना
जो आऊँ तुम्हारे काम,...।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम	- रागिनी स्वर्णकार (शर्मा)
जन्मतिथि	- 01.05.1972
जन्मस्थान	- बेगमगंज (रायसेन)
माता-पिता	- श्रीमती पार्वती सोनी -श्री पूरनचंद सोनी
पति	- श्री अरुण शर्मा
पुत्र	- कार्तिकेय 12 वर्ष
वर्तमान पता	- डायमंड रेसीडेंसी, सिलिकॉन सिटी, राऊ इन्दौर (मध्यप्रदेश)
पद	- हिन्दी व्याख्याता (शास. महाविद्यालय में)
शिक्षा	- बी.एस.सी., एम.ए., (हिन्दी साहित्य, इंग्लिश लिटरेचर) एम.एड. शोधरत कार्य
विधा	- गीत, मुक्तक, दोहे, अतुकांत, गज़ल, छंद, हाइकू, बालकविता, एवं लेख।
मो.नं.	- 9754835741
ई मेल	- ragini1572@gmail.com
कार्य पद	- 'संकल्प' शालेय पत्रिका का सम्पादन सतत् 8 वर्ष से। साहित्य संपादक :- संचार एक्सप्रेस (साप्ताहिक), निशात टाइम्स (साप्ताहिक)। मध्यप्रदेश प्रभारी:- साहित्य पत्रिका 'सवेरा' साहित्य संगम राजस्थान द्वारा प्रकाशित सह सम्पादक :- ' हिन्दी सागर' पत्रिका विश्व हिन्दी रचनाकार मंच नई दिल्ली मेम्बर :- एन्टीकरप्शन फाउंडेशन ऑफ इंडिया।
प्रकाशन	लोक जंग, वर्तमान, अंकुर, सवेरा, पत्रिका, धार भास्कर, नई दुनिया, देशबंधु रीडर एक्सप्रेस में रचनाएं प्रकाशित। रंगोली पत्रिका उ.प्र., शब्द शिल्पी (सतना), हिन्दी सागर (दिल्ली), सवेरा (इंदौर) साहित्य संगम में रचनाएं प्रकाशित।
पुस्तकें	साझा संग्रह - भारत के युवा कवि एवं कवयित्रियां (विश्व हिन्दी रचनाकार मंच) अभ्युदय काव्य माला साहित्य संगम संस्थान द्वारा, 'नारी से नारी तक' वुमन आवाज, संग्रह- प्राण ढाल दो ज़िन्दगी में (म.प्र. साहित्य अकादमी भोपाल के सहयोग से)
सम्मान	- हिन्दी सागर सम्मान, श्रेष्ठ युवा कवियत्री सम्मान (विश्व हिंदी रचनाकार मंच), साहित्य अभ्युदय सम्मान (साहित्य संगम संस्थान)

Women आवाज़
आधी आबादी की गूंज...
www.WomenAawaz.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
978-93-88102-14-8
मूल्य 40/-
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com